1

क्या सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अस्तित्व है?

कोई भी घर अपनी नींव से अधिक मज़बूत नहीं होता। घर के अलग-अलग भागों पर नींव का प्रभाव अवश्य होता है, जिस पर यह टिका है।

जैसे घर के लिए नींव का महत्व है, उसी प्रकार जीवन के लिए यह प्रश्न है कि ''क्या सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अस्तित्व है?'' परमेश्वर के प्रति हमारे विश्वास या अविश्वास से हमारे विचारों का आधार बनता है, जिससे जीवन के बारे में हमारे सभी विचारों को अभिव्यक्ति मिलती है अर्थात उनकी व्याज़्या होती है।

इसलिए सबसे विचारनीय प्रश्न, जो कोई पूछ सकता है, वह यह है कि ''क्या परमेश्वर का अस्तित्व है?'' इस प्रश्न के इतना महत्वपूर्ण होने का कारण यह है कि जो भी इसका उत्तर दिया जाएगा, उससे जीवन के सभी प्रश्नों के उत्तर प्रभावित होंगे।

उदाहरण के लिए मान लेते हैं कि कोई व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर यह कहकर देता है, ''नहीं, परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है।'' फिर, जैसे वह व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर देता है ''मैं इस संसार में कैसे जीऊंगा?'' उसका निष्कर्ष यह होगा, ''मुझे जैसा अच्छा लगे, मैं वैसे ही जीऊंगा। आखिर, मुझे बनाया थोड़े ही गया है, और न ही मैं किसी उच्च शक्ति के प्रति जवाबदेह हूं। मेरा कर्तव्य केवल यह है कि मैं अपने साथियों की ज़ुशी और उन्नति के लिए जहां तक हो सके, उनकी सहायता करूं। इसके बाद अपने जीवन के साथ मुझे क्या करना है, यह मुझ पर निर्भर है। क्योंकि मैं मृत्यु के बाद फिर तो जीऊंगा नहीं इसलिए इसी जीवन में मुझे जी भर कर जितना आनन्द मिले ले लेना चाहिए।''

अब, आइए यह मान लें कि एक व्यक्ति इस प्रश्न का कि ''क्या परमेश्वर का

अस्तित्व है?'' उत्तर यह कहकर देता है, ''हां, उसका अस्तित्व है।'' उसके इस प्रश्न का कि ''इस संसार में मैं कैसे जीऊंगा?'' उत्तर बिल्कुल ही अलग होगा। इस प्रश्न के उत्तर में वह कह सकता है, ''मुझे सर्वशक्तिमान ने बनाया है। मुझे अस्तित्व में लाने के लिए उसका स्पष्ट उद्देश्य था और मेरे लिए यह आवश्यक है कि मैं उस उद्देश्य की खोज करूं। केवल उसकी इच्छा को जानकर और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करके ही मुझे वह शान्ति और उद्देश्य मिलता है, जो सृष्टिकर्ता ने मेरे जीवन के लिए चाहा था। मैं जानता हूं कि एक दिन वह मुझे बुलाएगा ताकि मैं उस सब का हिसाब दूं कि उसके इस संसार में मैंने कैसे जीवन व्यतीत किया।''

आइए इस प्रश्न पर कि ''क्या सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अस्तित्व है?'' ध्यानपूर्वक विचार करें। क्या परमेश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करने के लिए कोई बात हमें बाध्य करती है? बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में बहस के साथ आरज़्भ नहीं होती। वास्तव में यह परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में एक अभिपुष्टि के साथ आरज़्भ होती है: ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:1)। परन्तु, परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में युक्तिसंगत प्रमाण पूरी ही बाइबल में बिखरे हुए हैं। कुछ प्रत्यक्ष रूप में और कुछ अप्रत्यक्ष रूप में; कुछ स्पष्ट रूप में लिखे गए हैं और अन्य का संकेत दिया गया है। आइए सबका निष्कर्ष निकालने के लिए इन दो कारणों पर विचार करें। यदि आप इन दो कारणों पर गहराई से विचार करें, तो दृढ़ता से यह विश्वास करने में कि वास्तव में परमेश्वर का अस्तित्व है, इनसे आपको अगुआई मिलेगी।

संसार का प्रमाण

पहला प्रमाण, जो हमें यह विश्वास करने के लिए बाध्य करता है कि परमेश्वर का अस्तित्व वास्तव में है, वह है हमारे आस-पास और हमारे ऊपर का संसार। इस संसार की सृष्टि भावपूर्ण ढंग से परमेश्वर के अस्तित्व की घोषणा करती है।

हम जिस ग्रह पर रहते हैं, उसे पृथ्वी कहते हैं। यह उस सौर प्रणाली का एक भाग है, जो सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती है। इस सौर प्रणाली की तरतीब और रूपरेखा अद्वितीय है। सभी ग्रह अपनी कक्षा में परिक्रमारत रहते हैं और कभी भी एक दूसरे से प्रतियोगिता नहीं करते। वे उचित गति और उचित दूरी से सूर्य को घेरा डालते हैं। सूर्य और पृथ्वी के सज़्बन्ध के कारण दिन, रात और मौसम बनते हैं। पृथ्वी हमेशा सूर्य से उचित दूरी पर

रहती है। यदि हम सूर्य से थोड़ा और दूर होते तो हम हिम की तरह जम जाते; यदि थोड़ा और निकट होते तो सूर्य की किरणों की गरमी से जल जाते।

वैज्ञानिक बताते हैं कि अंतरिक्ष में हमारे सौर मण्डल से आगे और भी कई सौर मण्डल हैं। हमें निश्चित रूप से इस सृष्टि की विशालता का भी पता नहीं है। हमारी दूरबीनें हमें इसके किनारे को नहीं दिखा सकतीं; हमारे मन इसकी विशालता को पूरी तरह से नहीं समझ सकते। बेशक, सृष्टि के बारे में हम बहुत कुछ नहीं जानते परन्तु एक बात हम निश्चित रूप से जानते हैं कि यह एक ऐसी सृष्टि है, जिसे बड़ी कला और व्यवस्थित ढंग से बनाया गया है। यह कोई संयोग मात्र और अव्यवस्थित नहीं; बल्कि एकरूप और सुव्यवस्थित है।

सृष्टि का अस्तित्व मांग करता है कि हम इसके बारे में दो में से एक निष्कर्ष निकालें: या तो इसे बनाया गया या यह केवल संयोग से ही बन गई। यदि कोई यह तर्क देता है कि यह सृष्टि अपने आप ही बन गई तो उसे या तो यह निष्कर्ष निकालना पड़ेगा कि यह सृष्टि अपने आप ही शून्य से बन गई या पहले से मौजूद पदार्थ के किसी प्रकार के विस्फोट के परिणामस्वरूप बनी। दो मुज़्य निष्कर्षों में से, युक्तिसंगत केवल यह है कि सृष्टि को बनाया गया। हम ईमानदारी के साथ यह विश्वास कैसे कर सकते हैं कि सृष्टि शून्य से बनी? हम तर्कशक्ति से यह विश्वास कैसे कर सकते हैं कि यह सृष्टि किसी विस्फोट के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आई और केवल पदार्थ ही है जो सदा से है?

मान लो कि एक व्यक्ति मेरे पास अपने हाथों में एक पुस्तक लिए हुए आया। उसने वह पुस्तक मुझे दी और मुझे कहा कि मैं इसे देखूं। मैं पुस्तक को जांचने लगा। मैंने ध्यान दिया कि पुस्तक के मुख पृष्ठ पर लिखा था ''क्रुडैन्स कज़्यलीट कन्कॉर्डैंस।'' मैंने यह भी ध्यान दिया कि इसके प्रकाशक का नाम ''ज़ौंडर्वन'' भी छपा हुआ था। अगले पन्नों को देखते हुए मैंने पाया कि इसमें KJV अंग्रेज़ी बाइबल में पाये जाने वाले विभिन्न नाम, स्थान और वाक्यांश वर्णमाला के क्रमानुसार दिए गए थे और उसके नीचे बाइबल में उनके अलग-अलग स्थानों पर पाए जाने वाले हवालों की सूची थी। पुस्तक में 2,00,000 हवालों की सूची दी गई थी। मैं उस व्यक्ति से यह कह सकता था, कि ''मुझे इसके प्रकाशक से सज़्पर्क करके इस पुस्तक की एक प्रति ले लेनी चाहिए।''

फिर वह व्यक्ति कहता है कि ''आप इस पुस्तक की प्रति खरीद नहीं सकते क्योंकि यह पुस्तक न तो ज़ौंडर्वन के द्वारा प्रकाशित हुई है और न ही अलैग्ज़ैंडर क्रूडन

ने इसे संग्रहीत किया है। यह पुस्तक तो अपने आप ही बनी है। यह हमें ऐसे ही बनी बनाई मिली थी। यह तो शून्य से बनी है।'' मैं उस व्यक्ति से कहूंगा, ''क्या तुम मुझे यह बता रहे हो कि इस पुस्तक में अंग्रेज़ी बाइबल के सभी नाम, स्थान और वांक्याशों का संग्रह किसी ने नहीं किया? क्या तुम मुझे यह बताना चाहते हो कि यह 2,00,000 से ऊपर के हवाले शून्य से बन गए? तुज़ यह कहना चाहते हो कि यह पुस्तक टाइप नहीं की गई? इसकी छपाई नहीं हुई और जिल्द नहीं बांधी गई?''

यदि उस व्यक्ति का जवाब हो ''हां, मैं यही कह रहा हूं,'' तो मैं कहूंगा, ''मैं जानता हूं कि तुज्हें गलतफहमी हुई है। एक इन्सान होने के नाते मैं तुज्हारा सज़्मान करता हूं, परन्तु इस पुस्तक के बनने के बारे में तर्क की मेरी योग्यता तुज्हारे निष्कर्ष को मानने की अनुमति नहीं देती। गलत ठहराए जाने के भय से रहित मैं यह कह सकता हूं कि यह किताब अपने आप नहीं बनी।'' इस व्यक्ति को दिए अपने उत्तर से मैं आश्वस्त हो सकता हूं क्योंकि इस पुस्तक के आरज़्भ के बारे में कोई भी और निष्कर्ष निकालने के लिए मेरी समझ मुझे अनुमति नहीं देती।

मान लीजिए कि एक और व्यक्ति मेरे पास आया और उसने मुझे एक रेडियो पकड़ा दिया। फिर उस व्यक्ति ने मुझ से कहा, ''इस रेडियो को देखो। इसके पीछे बिजली की तार लग सकती है और विद्युत-शक्ति द्वारा आप इस रेडियो को चलाओ तो इसके कार्यक्रम सुन सकते हो। रेडियो के अन्दर एक बैटरी भी है। जब रेडियो की तार बिजली के प्लग में लगी होती है तो बाद में उपयोग के लिए बैटरी में बिजली जमा होती रहती है। इस तरह जब आप कहीं बाहर गये हों, जहां पर बिजली न हो तो आप रेडियो का बटन दबा सकते हैं और बिना बिजली के प्लग में लगाए आप रेडियो के कार्यक्रम सुन सकते हैं। आप घर में भी इसको चला सकते हैं और जब कहीं घर से बाहर हों तब भी।'' मैं उस व्यक्ति से कहता हूं, ''यह तो बहुत ही उपयोगी वस्तु है। मैं कभी-कभी बाहर तो जाता ही हूं इसलिए इस तरह का रेडियो मेरे लिए बहुत उपयोगी होगा। यदि मुझे ऐसा रेडियो कहीं मिले तो मैं उसे खरीद लूं।''

कल्पना कीजिए उस आदमी ने मुझ से कहा, ''अरे नहीं। यह रेडियो खरीदा नहीं जा सकता। इसे किसी ने बनाया नहीं। यह तो अपने आप ही ऐसा बन गया। यहां से थोड़ी दूरी पर एक कारखाना है जिसमें सब प्रकार की सामग्री-प्लास्टिक, धातु, लकड़ी आदि थीं। उस इमारत में कुछ सप्ताह पूर्व एक विस्फोट हुआ और ये सब सामग्रियां हवा में उड़ गईं। हवा में ही कुछ सामग्रियां निकट आकर किसी प्रकार आपस में जुड़ गईं और रेडियो के रूप में नीचे आ गिरीं।'' विध्वंस हुई उस इमारत के

कचरे और मलबे में से हमें यह रेडियो मिला। किसी ने उसकी परिकल्पना अथवा निर्माण नहीं किया; यह तो उस विस्फोट के कारण बना। मैं उस आदमी से कहूंगा, ''क्या तुम मुझे यह समझा रहे हो कि मैं विश्वास कर लूं कि इस रेडियो की किसी ने परिकल्पना नहीं की, इसके पुर्ज़े नहीं बनाए और बड़ी सावधानी से इनका समायोजन नहीं किया? क्या तुम मुझे यह सिखा रहे हो कि इस रेडियो का बनना एक संयोग था, बुद्धि से इसका कोई सरोकार नहीं?'' यदि वह आदमी ज़िद करे कि यह रेडियो एक विस्फोट से अस्तित्व में आया तो मैं उसे कहूंगा, ''रेडियो के बारे में तुम्हारा ख़्याल गलत है। कोई भी विचारवान व्यक्ति इस प्रकार का निष्कर्ष नहीं निकाल सकता। मैं नहीं मान सकता कि रेडियो इस प्रकार बन सकता है।'' इस आदमी को उत्तर देने में मैं पूरी तरह सकारात्मक होऊंगा। तर्क द्वारा निष्कर्ष निकालने की मेरी योग्यता मुझे कोई और निष्कर्ष निकालने की अनुमति नहीं देगी।

पुस्तक और रेडियो के सम्बन्ध में जो निष्कर्ष बड़ी दृढ़ता के साथ हमने निकाला है, वही निष्कर्ष हमें इस सृष्टि के बारे में और भी दृढ़ता के साथ निकालना चाहिए। वैज्ञानिक वाक्पटुता के साथ कितनी भी परिभाषाएं क्यों न हों वे हमें यह विश्वास नहीं दिला सकतीं कि यह सृष्टि शून्य से बनी या यह किसी बहुत बड़े विस्फोट का परिणाम है। सृष्टि की परिकल्पना और निर्माण तो एक पुस्तक या रेडियो से कहीं ज्यादा बेहतरीन ढंग से किया गया है। यदि हम यह नहीं मान सकते कि एक पुस्तक यूं ही बन गई या यह कि एक रेडियो किसी विस्फोट का परिणाम है तो हम यह कैसे मान सकते हैं कि यह सृष्टि शून्य से बनी या निर्जीव पदार्थ के किसी विस्फोट का परिणाम है? जिन्होंने सृष्टि का थोड़ा सा भी अध्ययन किया है उन्होंने इस बोध के साथ कि सृष्टि तो जटिल परिकल्पना और यथार्थता की आश्चर्यजनक वस्तु है, अपने आपको इस अध्ययन से अलग कर लिया।

इस तर्क से हमने जो निष्कर्ष निकाला बाइबल उसकी पुष्टि करती है। भजन संहिता 19:1 कहता है, ''आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है।'' अन्य शब्दों में, रात को जब आसमान साफ हो तो हमें भूमि पर बैठकर सितारों से भरे आसमान में झांकना चाहिए, हम अपने आपको अद्भुत रूप से आराधना में पाएंगे। अपने असंख्य तारों के साथ अन्धकारमय आसमान प्रचार कर रहा होगा और हम मण्डली होंगे। सभा भवन वह घास होगा जिस पर हम बैठे होंगे। प्रचारक खामोशी से परन्तु बड़े ही भावपूर्ण ढंग से घोषणा कर रहा होगा कि तारे अकस्मात स्वयं ही अस्तित्व में नहीं आए बल्कि उनकी

रचना की गई। तारों से भरा आसमान परमेश्वर की महिमा का वर्णन करेगा। इस आराधना के बाद हम कहेंगे, ''इस प्रचारक का संदेश जो मैंने सुना सत्य ही है। मेरी समझ मुझे किसी और संदेश को स्वीकार करने की अनुमति नहीं देगी।''

पौलुस, जो नये नियम के लेखकों में से एक था, ने लिखा, ''क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं'' (रोमियों 1:20)। सृष्टि की प्रकट साकार वस्तुएं परमेश्वर के अदृश्य, अलक्षित हाथ के अस्तित्व को प्रमाणित करती हैं। वे उसके सर्वशक्तिमान होने और उसके अलौकिक स्वभाव के बारे में बताती हैं। हमें सामान्य प्रकाशन, अपने इर्द-गिर्द और ऊपर के संसार के द्वारा परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में पता चलता है। पौलुस ने यह भी कहा, ''तौभी उसने अपने आप को बेगवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर; तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा'' (प्रेरितों के काम 14:17)। हमारी पृथ्वी और सारी सृष्टि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के होने की गवाही देते हैं।

बच्चों की एक प्रसिद्ध कहानी में, रोबिन्सन क्रूसो का जहाज़ डूब गया और वह एक उजाड़ टापू में फंस गया। जब वह किसी तरह बचकर किनारे पहुंच गया तो उसने सबसे पहले अपने आस-पास देखा कि कहीं उसका कोई और साथी बचा हो परन्तु कोई भी नहीं बचा था। उसने पूरे टापू पर अन्य मनुष्यों को ढूंढा परन्तु कोई नहीं मिला। उसने निष्कर्ष निकाला कि उस टापू पर वह अकेला ही था। उसने अपने लिए लकड़ियों के लट्ठों और टहनियों से घर बना लिया। वह उस टापू में पाये जाने वाले जंगली जानवरों का शिकार करने लगा। एक दिन जब वह समुद्र के किनारे टहल रहा था तो उसने रेत में किसी अन्य मानवीय प्राणी के पदचिह्न देखे। उसे तुरन्त पता चल गया कि उसके तीन निष्कर्षों में से एक तो सही होगा ही: हो सकता है कि वह पदचिह्न बनाकर छोड़ गया हो। हो सकता है कि जिसने वे पदचिह्न बनाए हों, वह मर गया हो और क्रूसो उस मृत को उस टापू में खोज लेगा। हो सकता है कि जिसने वे पदचिह्न बनाए हों वह अभी भी टापू पर जीवित हो। इस सत्य के कारण कि उसके अलावा उस टापू पर कोई और भी था, उसका दिल खुशी से भर गया। पदचिह्नों ने उसके उपरोक्त अनुमानों को प्रमाणित किया। इस बारे में पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए उसने सारा टापू छान मारा, अन्ततः एक शुक्रवार उसे वह आदमी मिल गया, जिसने वे पदचिह्न बनाए थे। उसने उसका नाम शुक्रवार रख दिया क्योंकि वह उसे उसी दिन मिला था।

हम भी कुछ-कुछ इस कहानी के पात्र रोबिन्सन क्रूसो के जैसे ही हैं। हमारे सामने पृथ्वी, तारे, सूर्य और चन्द्रमा उन पदचिह्नों के समान ही हैं। ये चिह्न एक सर्वशक्तिमान जीव ने बनाए हैं। यदि क्रूसो उन पदचिह्नों को देखकर यह निष्कर्ष निकालता कि वे किसी शून्य से बने हैं तो वह मूर्ख ही होता। इसी प्रकार यदि हम तर्क की उपेक्षा कर यह निष्कर्ष निकालें कि सृष्टि यूं ही अस्तित्व में आ गई या यह शून्य से बनी है तो यह हमारी समझदारी नहीं होगी।

हमारे आस-पास और हमारे ऊपर का संसार केवल एक ही निष्कर्ष की ओर संकेत करता है: कि इस सृष्टि और जो इसके आगे है, सबके पीछे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही है। इस बारे में हम आश्वस्त हो सकते हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे इस बात में कि एक पुस्तक शून्य से नहीं बन सकती और एक विद्युत रेडियो किसी विस्फोट का परिणाम नहीं हो सकता।

मनुष्य का प्रमाण

दूसरा, मनुष्य के अस्तित्व से मिलने वाले प्रमाण के कारण हम बिना संदेह किए विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व सचमुच है। मनुष्य का अस्तित्व परमेश्वर के होने का ऐलान करता है।

मनुष्य भौतिक संसार से कहीं बढ़कर अद्‌भुत है। उसकी बौद्धिक शक्तियों पर विचार करें। वह तर्क दे सकता है, विश्वास कर सकता है, प्रेम कर सकता है, स्वप्न देख सकता है, योजना बना सकता है और परिकल्पना भी कर सकता है। कुछ लोग चार या पांच भाषाएं धारा-प्रवाह बोल सकते हैं। वैज्ञानिक बताते हैं कि उस सर्वोत्तम कज़्प्यूटर से जो हम बना सकते हैं, मनुष्य के मस्तिष्क की एक कोशिका फिर भी अधिक जटिल है।

मनुष्य के आत्मिक स्वभाव पर विचार करें। मनुष्य हमेशा से ही आराधना करने वाला जीव रहा है। पुराने समय के लोग किसी ऊपरी शक्ति की आराधना करने की चाह रखते थे। मनुष्य को अपने अन्दर कुछ कमी सी लगती है। उसके अन्दर नैतिक विवेक है। कई बार यह विवेक अधिक शिष्ट नहीं होता, परन्तु इसका अस्तित्व हमेशा रहता है।

मनुष्य की शारीरिक रचना पर विचार करें। आप मानवीय देह के किसी अंग का अध्ययन करने के लिए पूरा जीवन लगाकर भी उसकी खोज को पूरा नहीं कर सकते।

जीवन के बारे में विचार करें। हम इसकी रचना नहीं कर सकते और मृत्यु के बाद उसे फिर से जीवित नहीं कर सकते। हम इसकी अच्छी तरह व्याज़्या नहीं कर सकते और न ही हम पूरी तरह इसको वश में कर सकते हैं। मनुष्य की आश्चर्यजनक रचना उसके बनाने वाले के अस्तित्व की घोषणा करती है।

मान लें कि हम कक्षा में बैठे किसी विज़्यात प्राध्यापक से जीवन के उदय के बारे में भाषण सुन रहे हैं। वह वैज्ञानिक शब्दावली और उन सभी व्याज़्याओं को छोड़ कर जिसका उसने उपयोग किया, संक्षेप में कहता है, ''आरज़्भ में किसी प्रकार की कोई कोशिका थी और इसमें जीवन का अंश था। यह अनेक हुए, बढ़े और विकसित हो गये। एक प्रकार का समुद्री जीव प्रकट हुआ। यह अनेक हुए, बढ़े और विकसित हो गये। एक प्रकार का पृथ्वी पर रहने वाला जीव प्रकट हुआ। यह अनेक हुए, बढ़े और विकसित हो गए। अन्ततः करोड़ों वर्ष बीत जाने के बाद वे जीव मनुष्य के रूप में विकसित हो गए।''

प्राध्यापक का भाषण सुनकर हमारे मन में तीन प्रश्न उठते हैं, जिन्हें उसकी पद्धति हल नहीं करती। वह ऐसे प्रश्नों को छोड़ देता है जैसे उसके लिए इनका कोई महत्व ही न हो और इनकी बात करनी भी व्यर्थ हो, परन्तु इन प्रश्नों के साथ-साथ उसके व्यवहार, उसकी पद्धति को स्वीकार करना असज़्भव और युक्तिसंगत नहीं लगता। पहला प्रश्न जीवन के प्रारज़्भ का स्पष्टीकरण है। उसकी पद्धति के अनुसार जीवन शून्य से आया। कोई भी व्यक्ति यह मानने के लिए तैयार नहीं है कि पुस्तक शून्य से आई और यह कि रेडियो एक विस्फोट से मिला, फिर जीवन तो पुस्तक और रेडियो से कहीं अधिक जटिल है। मनुष्य पुस्तक और रेडियो तो बना सकता है, परन्तु वह जीवन की रचना नहीं कर सकता। फिर भी प्राध्यापक हमसे यह विश्वास करने को कहता है कि जीवन शून्य से निकला।

दूसरा प्रश्न प्रकृति के नियमों के अस्तित्व की व्याज़्या है। प्राध्यापक की पद्धति के अनुसार प्राकृतिक नियम शून्य से बना। हमारा संसार प्राकृतिक नियमों से संचालित होता है। यदि आप खाना नहीं खाते या आपके शरीर को भोजन नहीं मिलता है तो आप मर जाओगे। आप इस नियम की उपेक्षा नहीं कर सकते अर्थात इसे टाल नहीं सकते। कोई भी इससे छूट नहीं सकता। यदि आप सोते नहीं हो तो थकावट से आप बीमार पड़ जाओगे। आप इस प्राकृतिक नियम को तोड़ नहीं सकते। न ही आप मृत्यु के प्राकृतिक नियम पर काबू पा सकते हो। मानव जीवों की मृत्यु होना 100 प्रतिशत सत्य है। इसका कोई अपवाद नहीं है। प्राध्यापक अपनी पद्धति से यह समझाना

चाहता है कि प्राकृतिक नियम तो यूं ही अपने आप बन गए।

तीसरा प्रश्न परिवार के अस्तित्व के स्पष्टीकरण का है। मनुष्यजाति परिवारों से ही बनती है। मानवीय इतिहास में हमें ऐसा कहीं नहीं मिलता जब परिवार का अस्तित्व न रहा हो। प्राध्यापक चाहता होगा कि हम विश्वास कर लें कि पुरुष उसी समय पूर्ण रूप से विकसित हुआ जब स्त्री पूर्ण रूप से विकसित हुई। अचानक उन्हें एक दूसरे का साथ सुखद लगा और इस तरह ज्ञात इतिहास से लेकर अब तक वे पारिवारिक सम्बन्ध को बनाए हुए हैं। पुरुष स्त्री से भिन्न है, और स्त्री पुरुष से; परन्तु अनुरूपता और एक दूसरे के लिए वे एक जैसे ही हैं। प्राध्यापक का कहना है कि वे एक ही समय में पूर्ण रूप से विकसित हुए और परिणामस्वरूप परिवार बनाकर रहने लगे। अन्य शब्दों में वह दलील देता है कि परिवार शून्य से बना- भाव यह कि यह तो अकस्मात ही हो गया।

हमारा मन हमें यह स्वीकार करने की अनुमति नहीं देता कि जीवन शून्य से बना, प्राकृतिक नियम शून्य से बने और मानवीय परिवार शून्य से बना। समझदारी के साथ मनुष्य के अस्तित्व के स्पष्टीकरण का एकमात्र युक्तिसंगत ढंग तो यह है कि एक सर्वशक्तिमान जीव ने उसकी रचना की और उसे एक विशेष कारण से पृथ्वी पर रखा।

युक्ति से हमने जो निष्कर्ष निकाला, बाइबल उसी की घोषणा करती है। बाइबल के पहले अध्याय में हमें बताया गया है, ''फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार और अपनी समानता में बनाएं;...' '' (उत्पत्ति 1:26)। बाइबल के अनुसार मानवीय शरीर ईश्वरीय जीवन से बना है। हमें आगे बताया गया है, ''परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मुनष्यों की सृष्टि की, और परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उन से कहा, 'फूलो-फलो, पृथ्वी में भर जाओ और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो' '' (उत्पत्ति 1:27, 28)। परमेश्वर ने मनुष्य को आत्मिक स्वभाव दिया जैसे उसका अपना है। उसने मनुष्यों में नर और नारी बनाकर परिवार की रचना की। परमेश्वर ने पृथ्वी को संचालित करने के लिए प्राकृतिक नियम बनाए।

तर्क यह मांग करता है कि हम मान लें कि मानवीय जीवन को एक सर्वशक्तिमान हाथ ने ईश्वरीय उद्देश्य के लिए बनाया। निस्संकोच हम कह सकते हैं कि ''मेरे मन का स्वामी तो तू है; तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा। मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिए

कि मैं भयानक और अद्‌भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं; और मैं इसे भली भांति जानता हूं'' (भजन संहिता 139:13, 14)।

एक बार एक मिशनरी ने कहा, ''मैं संसार के कई देशों में गया हूं और मुझे प्रत्येक देश में एक जैसा अनुभव हुआ। उदाहरण के लिए जब बच्चों को सिखाया जाता है कि दो और दो चार होते हैं, तो उनकी प्रतिक्रिया सदैव एकसमान होती है। वे इस पर विचार करते हैं और एक ही निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह सही है। उनके मन में कुछ है, जो इस विचार तक उन्हें पहुंचाता है और वे इसे सत्य मानते हैं। इसी प्रकार जब इन सभी अलग-अलग देशों के लोगों को सिखाया जाता है कि परमेश्वर ने सृष्टि और मुनष्य की रचना की तो वे इसके बारे में विचार करते हैं और फिर निष्कर्ष निकालते हैं कि यही सही है। उनके मन में कुछ है जो उन्हें उस शिक्षा तक पहुंचाता है और इसे सत्य स्वीकार करवाता है। मैं जहां भी गया हूं हर जाति और हर देश में मुझे ऐसी ही प्रतिक्रिया मिली है।''

यदि आप मनुष्य के अस्तित्व - उसके जीवन, उसकी बौद्धिकता, उसके आत्मिक स्वभाव, उसके नैतिक विवेक, और उसकी शारीरिक रचना पर विचार करें तो निश्चय ही आप यह निष्कर्ष निकालेंगे कि वह यूं ही अस्तित्व में नहीं आ सकता था, बल्कि उसे किसी सर्वशक्तिमान ने बनाया था। आप दृढ़ता से कह सकते हैं कि परमेश्वर सचमुच है। मुनष्य का अस्तित्व इसे प्रमाणित करता है।

सारांश

जिन दो प्रमाणों पर हमने ध्यान दिया है, उनके बारे में आप गहराई से विचार करें- संसार का प्रमाण और मनुष्य का प्रमाण। जो निष्कर्ष इनसे निकलना चाहिए वह अटल है और उसका इन्कार नहीं किया जा सकता। इसलिए बाइबल कहती है, ''मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं'' (भजन संहिता 14:1)।

यह विश्वास करना भी युक्तिसंगत है कि परमेश्वर जिसने हमें बनाया, एक दिन हमें न्याय के लिए बुलाएगा और हमसे उस सब का हिसाब मांगेगा जो हमने इस जीवन में किया। यही वे कारण हैं, जिनके लिए परमेश्वर ने यीशु को इस जगत में भेजा और हमें बाइबल दी। वह चाहता था कि हम जान लें कि हम यहां क्यों हैं और वह हम से क्या अपेक्षा करता है। यीशु ने कहा, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है, उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है,

वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)।

आश्चर्यजनक सत्य, जो यीशु और बाइबल हम पर प्रकट करते हैं, वह यह है कि परमेश्वर हमें गोद लेकर अपनी संतान बनाना चाहता है। वह जिसने सूर्य, चांद, तारे, पृथ्वी और समस्त सृष्टि को बनाया, मुझे अपने परिवार में सदा तक अपने संग रहने के लिए बुलाना चाहता है। उसने अपने पुत्र के सुसमाचार के द्वारा मुझे अपने परिवार में निमन्त्रण दिया है। यीशु मसीह पर विश्वास करने, पापों से मन फिराने, यीशु का अंगीकार करने और मसीह की देह में बपतिस्मा पाकर उसके सुसमाचार की बात मानने पर मुझे उसके आत्मिक परिवार में गोद ले लिया जाता है (इफिसियों 1:5; गलतियों 4:6)। पवित्र शास्त्र के अनुसार आप केवल यही नहीं जान सकते कि परमेश्वर सचमुच में है बल्कि आप यह भी जान जाएंगे कि आप वास्तव में उसी की संतान हैं।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 230 पर)

1. सबसे विचारनीय प्रश्न, जो कोई पूछ सकता है, क्या है?
2. प्रश्न ''क्या परमेश्वर का अस्तित्व है?'' इतना विचारनीय क्यों है?
3. बाइबल किस पुष्टि के साथ आरम्भ होती है?
4. वह पहला प्रमाण कौन सा है, जो हमें परमेश्वर में विश्वास करने पर बाध्य कर देता है?
5. मनुष्य के अस्तित्व के स्पष्टीकरण के लिए परमेश्वर को नकारने वाले को कौन सी तीन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

सृष्टिकर्ता या संयोग?

न्यूयॉर्क स्टेट एकेडमी ऑफ़ साइंस के पूर्व प्रेसीडेंट, डॉक्टर ए. क्रेसी मॉरिसन ने कहा:

> एक प्रमाण है, जो ज़ोरदार ढंग से सांकेतिक मार्गदर्शक की तरह हर उद्देश्य के पीछे है ...हमने पाया है कि संसार सही स्थान पर है, पृथ्वी की ऊपरी सतह दस फुट के भीतर समायोजित है, और यदि समुद्र कुछ फुट और गहरे होते तो हमें कोई ऑक्सीजन अथवा वनस्पति न मिलती। हमने पाया है कि पृथ्वी चौबीस घण्टे घूमती है और यदि इस परिक्रमा में कुछ रुकावट पड़ जाती है, तो जीवन असज़्भव हो जाएगा। यदि सूर्य के इर्द-गिर्द पृथ्वी की गति भौतिक रूप से तीव्र अथवा धीमी हो जाती तो जीवन का इतिहास, यदि कोई होता, तो वह बिल्कुल ही अलग होता। हमें पता चलता है कि सूर्य उन हज़ारों कारणों में से एक है, जिनसे पृथ्वी पर हमारा जीवन सज़्भव होता है, इसका आकार, घनत्व, तापमान और इसकी किरणों की विशेषता, सब उचित मात्रा में होने चाहिए, और उचित हैं भी। हम पाते हैं कि वातावरण की गैसें एक दूसरे से समायोजित हैं और मामूली सा बदलाव भी घातक हो सकता है...।
>
> पृथ्वी के आयतन, अंतरिक्ष में इसके स्थान और समायोजनों की सूक्ष्मता पर विचार करें, इन समायोजनों के घटित होने के क्रम दस लाख में से एक हैं, और इन सभी घटनाओं के घटित होने के अवसर का अनुमान नहीं लगाया जा सकता ... इसलिए, इन तथ्यों का अस्तित्व, संयोग के किसी भी नियम से मेल नहीं खाता ... निस्सन्देह प्रकृति के आश्चर्यों का सर्वेक्षण यह दर्शाता है कि इस सब में परिकल्पना और उद्देश्य हैं। उस सर्वोच्च जीव के द्वारा जिसे हम परमेश्वर कहते हैं, इसके असीम विस्तार में एक कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

ए. क्रेसी मॉरिसन, *मैन डज़ नॉट स्टैंड अलोन* (मनुष्य अकेला खड़ा नहीं है) (न्यूयॉर्क: ज़्लेमिंग एॅच. रिवैल कं., 1944), 94, 95; बैटसेल बैरेट बैक्सटर में उद्धृत, *आई बिलीव बिकॉज़*... (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: बेकर बुक हाउस, 1971), 66।